International Journal of Physical and Social Science
Vol. 8 Issue 04, April 2018
ISSN: 2249-5894 Impact Factor: 6.644
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

शिक्षक प्रशिक्षण विभागों में कार्यरत शिक्षको की शिक्षण प्रभावशीलता एवं व्यक्तित्व के गुणों के मध्य सहसम्बन्ध

शोधार्थिनी
कविता रानी
शिक्षा संकाय
मेवाड़ विश्वविद्यालय, चित्तोडगढ,

उपपर्यवेक्षक
डा0 किरन गर्ग
शिक्षा संकाय
दिगम्बर जैन डिग्री कालिज राजस्थान बडौत (बागपत)

प्रस्तावना

प्रत्येक व्यक्ति शिक्षा शब्द का प्रयोग करता है। और अपने विचार भी प्रस्तुत करता है परन्तु अध्यापक प्रशिक्षक इस पर विचार नही करता है जबकि उनका शिक्षा से सीधा सम्बन्ध है। अध्यापक–प्रशिक्षक शिक्षण करता है। शिक्षण का प्रशिक्षण देता है। इस प्रकार यहॉ शिक्षा का अर्थ अध्यापकों को प्रशिक्षण देना है। इस प्रशिक्षण में शिक्षण क्रियाओं एवं कौशलों का विकास करता है, जिससे कक्षा में पाठ्यवस्तु को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत कर सके। यहॉ पर शिक्षा शब्द का प्रयोग प्रशिक्षण के लिए किया जाता है। प्रशिक्षण में शिक्षण के व्यावहारिक कौशलो तथा पाठ्यवस्तु के प्रस्तुतीकरण का अभ्यास कराया जाता है।

इस प्रकार अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता का सीधा अर्थ होता है शिक्षण को प्रभावशाली बनाना। देश की शासन पणाली भी शिक्षण के स्वरूप को प्रभावित करती है। शिक्षण विषय, शिक्षण उद्देश्य तथा शिक्षण स्तर आदि भी शिक्षण की प्रकृति को प्रभावित करते है।

बी0ओ0 स्मिथ के अनुसार–

''शिक्षण क्रियाओं तथा हाव–भाव की प्रक्रिया है जिससे अधिगम होता है जिसमें छात्र तथा अध्यापक की पारम्परिक अन्तःक्रिया अपेक्षित है।''

अध्यापक–शिक्षण गुणवत्ता के लिए प्राथमिक घटक शिक्षण सक्षमता का विकास करना है। शिक्षण सक्षमता को चार पक्षों में विभाजित किया है–

- विषय–वस्तु का स्वामित्व होना,
- शिक्षण कौशलों में सक्षमता होना,

- व्यवहारिक सक्षमता हाना
- समस्या समाधान की सक्षमता होना।

अध्यापक–शिक्षा में गुणवत्ता के लिए शिक्षण के ढंग का विकास करना चाहिए जिससे छात्राध्यापकों के व्यवहार में चमक लाई जा सकती है। शिक्षण के ढंग को पांच प्रकार बताया गया है।

- कक्षा–प्रबन्धन की चमक होना,
- शिक्षण में गतिशीलता होना,
- ओजपूर्व तथा स्वीकार करने की प्रवृत्ति होना,
- शिक्षण में लचीलापन होना,
- शिक्षण में सर्जनात्मकता तथा रचनात्मकता का होना।

उपरोक्त शिक्षण के ढंग को शिक्षण की विशेषतायें मानी जाती है इस विशेषताओं में छात्र–शिक्षण के पारस्परिक सम्बन्ध का विशेष महत्व है। शिक्षण में इन गुणों से कक्षा वातावरण छात्रों को सीखने हेतु समुचित परिस्थितियां उत्पन्न करता है। सजीव सहयोग की भावना जागृत होती है।

व्यक्तित्व एक जटिल प्रत्यय है तथा अपनी इसी जटिलता और गूढता के कारण काफी समय तक मनोवैज्ञानिकों द्वारा यह उपेक्षित विषय रहा है। इस दिशा में सर्वप्रथम प्रयास क्रेवलिन, जेने, फ्रायड आदि शिक्षा–शास्त्रियों द्वारा प्रारम्भ किये गये। वस्तुतः व्यक्तित्व शब्द अंग्रेजी भाषा के पर्सनेलिटी शब्द का पर्याय है जो लैटिन भाषा के पर्सोना शब्द से लिया गया है। पर्सोना का अंग्रेजी में पर्याय है जो नकाब या मुखवरण कहलाता है। ग्रीक अभिनेता इसे अपने कार्य या चरित्र के अनुसार अभिनय से पूर्व पहना करते थे। पर्सोना से सम्बन्धित होने के कारण प्रारम्भ में व्यक्तित्व का अर्थ व्यक्ति के बाह्रा रंग–रूप, आकार आदि से ही लिया जाता था परन्तु व्यक्ति की इस व्याख्या को हम पूर्ण एवं सन्तोषप्रद नही मान सकते, क्योंकि मनुष्य की आकृति ही मनुष्य के व्यक्ति का बोध नही कराती। यदि ऐसा मान भी ले तो ऐसे अनेक उदाहरण मिलते है जिनमें हम देखते है कि कुछ मनुष्यों का ब्राहा रूप बिल्कुल आकर्षक नही होता परन्तु उनका व्यक्तित्व अत्यन्त आकर्षक होता ह, जैसे–गाँधी, टैगोर, शास्त्री, बिनोबा आदि। स्पष्ट है कि व्यक्तित्व मात्र बाह्रा बनावट से ही निर्धारित नही होता है, अपितु उसके लिए कुछ

आन्तरिक गुणों का होना भी अत्यन्त आवश्यक होता है। आन्तरिक गुणों के अभाव में व्यक्तित्व अपूर्ण समझा जाता है। कुछ व्यक्ति व्यक्तित्व को एक अन्य अर्थ में लेते है, उनके अनुसार दूसरों को प्रभावित करना ही अच्छा व्यक्तित्व है। जिसे वे सामाजिक उददीपक मूल्य के नाम से सम्बोधित करते है। उदाहरणार्थ यदि हम यह कहे कि प्रतीक एक बडा प्यारा आकर्षक व्यक्तित्व रखता है तो हमारा यह कथन एकांगी है क्योंकि यहां हम व्यक्ति के आन्तरिक गुणों की उपेक्षा कर रहे है और मात्र व्यक्ति के रंग रूप, वेश–भूषा, चेहरे–मोहरे के नयन–नक्श आदि को ही व्यक्तित्व का पैमाना मान बैठे है। प्रायः सुना जाता है कि अमुक व्यक्ति का कोई व्यक्तित्व नही है और अमुक व्यक्ति का आकर्षक एवं चुम्बकीय व्यक्तित्व है। जिन व्यक्तियों में व्यक्ति के शील गुणों, की मात्रा का या न्यूनता होती है उन्हे व्यक्तित्व विहीन और जिनमें बाहुल्य होता है और वैक्तिकता युक्त कहा जाता है।

शोध कार्य की आवश्यकता एवं महत्व

एक शिक्षक का प्रभाव अद्भुत हो सकता है यदि वह एक प्रभावी शिक्षक है। आज के जटिल और गतिशील समाज की पूरी संरचना, शिक्षा प्रणाली पर आधारित है, जिसकी रीढ़ शिक्षक हैं, विशेष रूप से प्रभावी शिक्षक जो अपने आसपास बड़ी संख्या में छात्रों को आकर्षित कर सकते हैं और उनका गौरव किसकी उपलब्धि के संदर्भ में परिलक्षित होता था उनके छात्रय बच्चों के सर्वांगीण विकास को बढ़ावा देने में ध्वनि व्यक्तित्व पैटर्न और पेशेवर अंतदृष्टि का प्रभावी उपयोग करने की क्षमता। इसलिए, आज, शैक्षिक अनुसंधान में एक कठिन समस्या यह है कि शिक्षक की प्रभावशीलता को पहचानना – या कम प्रभावी शिक्षकों से प्रभावी भेदभाव करना। शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में शिक्षकों की भूमिका निस्संदेह महत्वपूर्ण है। छात्र पर किसी भी शैक्षिक कार्यक्रम या नवाचार का प्रभाव शिक्षक के माध्यम से संचालित होता है। इस प्रकार, किसी भी मानक के स्कूल की सफलता सीधे उसके शिक्षकों की गुणवत्ता पर निभर करती है। इसलिए शिक्षा के स्तर की ऊर्ध्वाधर गतिशीलता के लिए, पहला और सबसे महत्वपूर्ण कदम प्रभावी शिक्षकों का उत्पादन होना चाहिए।

शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के शिक्षकों के व्यक्तित्व के गुणों को जानने के लिय ही अनुसंधानकर्ता ने विभिन्न शोध कार्यो का अध्ययन कर यह निष्कर्ष निकाला की व्यक्तित्व के गुणों से सम्बन्धित बहुत ही कम शोध कार्य अभी तक हुआ है अतः शोधकर्ता द्वारा शिक्षक प्रशिक्षण विभागों में कार्यरत शिक्षको की शिक्षण प्रभावशीलता एवं व्यक्तित्व के गुणों के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन करने का निर्णय लिया गया ।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

यिलमाज (2014) ने प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की व्यक्तित्व विशेषताओं और उनके बर्नआउट स्तरों के बीच संबंध को निर्धारित किया। नमूने में कुटह्या सिटी सेंटर के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत 303 शिक्षक शामिल थे। पांच कारक वर्तमान अध्ययन के लिए डेटा एकत्र करने के लिए गोल्डबर्ग द्वारा व्यक्तित्व स्केल और मासलाच और जैक्सन द्वारा मासलाच बर्नआउट इन्वेंटरी का उपयोग किया गया था। परिणाम से पता चला कि प्रतिभागियों ने व्यक्तित्व विशेषताओं के संबंध में क्रमशः कर्तव्यनिष्ठा, सहमतता, और अनुभव के लिए खुलेपन, बहिर्मुखता और भावनात्मक स्थिरता आयामों में उच्चतम भागीदारी का प्रदर्शन किया। प्रतिभागियों की भावनात्मक थकावट का स्तर मध्यम स्तर पर था, जबकि कम व्यक्तिगत उपलब्धि और प्रतिरूपण स्तर कम थे। शिक्षकों की व्यक्तिगत विशेषताओं और बर्नआउट स्तरों के बीच सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण मध्य से निम्न स्तर का नकारात्मक सहसंबंध पाया गया। इस प्रकार, यह विश्लेषण किया गया कि व्यक्तिगत विशेषताओं के बारे में शिक्षकों के सकारात्मक विचारों में वृद्धि, उनके जलने के स्तर में कमी आई है।

सिंह, शर्मा, तरुना और शिखा (2014) ने छात्रों के व्यक्तित्व लक्षणों (विक्षिप्तता, बहिर्मुखता, अनुभव के लिए खुलापन, सहमतता और कर्तव्यनिष्ठा) और तनाव के स्तर के बीच अंतर–संबंध की जांच की। इस नमूने में हरियाणा के सिरसा जिले के विभिन्न स्कूलों के वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के 60 छात्र शामिल थे। वर्तमान अध्ययन के लिए डेटा एकत्र करने के लिए पुरी, कौर और मेहता द्वारा छम्ब–पांच फैक्टर इन्वेंटरी कोस्टा और मैक्क्रीया द्वारा और स्ट्रेस स्केल का उपयोग किया गया था। निष्कर्षों से तनाव और व्यक्तित्व लक्षणों के बीच महत्वपूर्ण संबंध का पता चला। विक्षिप्तता के बीच एक महत्वपूर्ण सकारात्मक सहसंबंध और सहमतता, बहिर्मुखता और कर्तव्यनिष्ठा के बीच महत्वपूर्ण नकारात्मक सहसंबंध भी पाया गया।

रमेश और राजू (2015) ने आंध्र प्रदेश के उत्तरी तटीय जिलों में इंजीनियरिंग कॉलेज के शिक्षकों के बीच परिवर्तन की प्रवृत्ति और नौकरी से संतुष्टि के संबंध में आत्म–प्रभावकारिता का अध्ययन किया। नमूने में आंध्र प्रदेश के उत्तरी तटीय जिलों के 500 इंजीनियरिंग कॉलेज के शिक्षक शामिल थे। निम्मा द्वारा शिक्षक दक्षता पैमाना, परिवर्तन प्रवृत्ति देवगिरी द्वारा वर्णनात्मक प्रश्नावली, और पकालपति द्वारा शिक्षक नौकरी संतुष्टि स्केल डेटा संग्रह के लिए उपकरण का उपयोग किया गया था। परिणामों से पता चला कि इंजीनियरिंग कॉलेज के पुरुष और महिला शिक्षकों के बीच उनके शिक्षक आत्म–प्रभावकारिता के संबंध में महत्वपूर्ण अंतर पाया गया। इंजीनियरिंग कॉलेज के पुरुष और महिला शिक्षकों के बीच स्व–प्रभावकारिता चर से संबंधित विचित्र अनुभवों के आयाम में महत्वपूर्ण अंतर पाया गया। ग्रामीण और शहरी इंजीनियरिंग कॉलेज के शिक्षकों के बीच उनके शिक्षक आत्म–प्रभावकारिता में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं था। अभियांत्रिकी महाविद्यालय के विवाहित एव अविवाहित शिक्षकों के बीच शिक्षकों की आत्म–प्रभावकारिता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अभियांत्रिकी महाविद्यालय के 40 वर्ष से अधिक आयु के शिक्षकों और 40 वर्ष से अधिक आयु के शिक्षकों की आत्म–प्रभावकारिता में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं था।

किम, लिसा और डार–निम्रोद, इलान और मैककैन, कैरोलिन। (2017) माध्यमिक विद्यालय में शिक्षक व्यक्तित्व और शिक्षक प्रभावशीलताः व्यक्तित्व शिक्षक समर्थन और छात्र आत्म–प्रभावकारिता की भविष्यवाणी करता है लेकिन अकादमिक उपलब्धि नहीं। छात्रों के शैक्षिक परिणामों की भविष्यवाणी उनकी गैर–संज्ञानात्मक विशेषताओं द्वारा की जाती है, जिसमें बिग फाइव व्यक्तित्व डोमेन शामिल हैं। यद्यपि शिक्षण और सीखने के सिद्धांत बताते हैं कि शिक्षक गैर–संज्ञानात्मक विशेषताएं भी छात्र परिणामों को प्रभावित करती हैं, ऐसी विशेषताओं का व्यवस्थित रूप से अध्ययन शायद ही कभी किया जाता है। हम प्रस्ताव करते हैं कि शिक्षकों के बिग फाइव व्यक्तित्व डोमेन शिक्षक प्रभावशीलता से जुर्डे हैं। इसके अलावा, हम इन संबंधों के दो संभावित मॉडरेटरों का परीक्षण करते हैंः (1) शिक्षक व्यक्तित्व रिपोर्ट का स्रोत (छात्र रिपोर्ट शिक्षक स्वय–रिपोर्ट की तुलना में अधिक प्रभाव दिखा सकती है) और (2) संदर्भ का फ्रेम (प्रासंगिक ''स्कूल में'' शिक्षक स्वयं के लिए व्यक्तित्व आइटम –रिपोर्ट गैर–प्रासंगिक मानक व्यक्तित्व वस्तुओं की तुलना में अधिक मजबूत प्रभाव दिखा सकती है)। माध्यमिक विद्यालय के छात्रों (एन = 2,082)

आर उनके गणित और अंग्रेजी शिक्षकों (एन = 75) से एकत्र किए गए आंकड़ों पर बहुस्तरीय प्रतिगमन आयोजित किए गए थे। हमने छात्र और शिक्षक के लिंग, छात्र की पिछली शैक्षणिक उपलब्धि और छात्र के व्यक्तित्व के लिए सांख्यिकीय रूप से नियंत्रित किया। शिक्षक व्यक्तित्व ने शिक्षक प्रभावशीलता के व्यक्तिपरक उपायों की भविष्यवाणी की– सबसे मजबूत भविष्यवाणियां शिक्षक अकादमिक समर्थन के लिए ईमानदारी, शिक्षक व्यक्तिगत समर्थन के लिए सहमति, और छात्र प्रदर्शन आत्म–प्रभावकारिता के लिए विक्षिप्तता थे। शिक्षक के व्यक्तित्व ने वस्तुनिष्ठ माप (छात्र शैक्षणिक उपलब्धि) की भविष्यवाणी नहीं की। इन प्रभावों को व्यक्तित्व रिपोर्ट के स्रोत द्वारा नियंत्रित किया गया था लेकिन संदर्भ के फ्रेम द्वारा नहीं। भविष्य में प्रारंभिक शिक्षक प्रशिक्षु चयन प्रक्रिया के हिस्से के रूप में व्यक्तित्व को शामिल करने की संभावना पर संक्षेप में चर्चा की गई है। बोगुनोवी (2018) ने एक संगीत वाद्ययंत्र शिक्षक के व्यक्तित्व का वर्णन किया, गैर–संगीतकारों के समूह की तुलना में मतभेदों को निर्धारित किया, और सामान्य और पेशेवर शिक्षक प्रोफाइल की संरचना में व्यक्तिगत विशेषताओं की स्थिति निर्धारित की। नमूने में 60 व्यक्ति शामिल थे, जो पांच प्राथमिक संगीत विद्यालयों में विभिन्न संगीत वाद्ययंत्रों को पढ़ाते थे। डेटा एकत्र करने के लिए नमूने पर प्रशासित किया गया था। निष्कर्षों से पता चला कि संगीत शिक्षकों ने उच्च स्तर के खुलेपन, सहमतता और कर्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया।

अध्ययन का उद्देश्य

अध्ययन निम्नलिखित उद्देश्यों को पूरा करने के लिए आयोजित किया गया था:

1. शिक्षक प्रशिक्षण विभागों में कार्यरत शिक्षको की शिक्षण प्रभावशीलता एवं व्यक्तित्व के गुणों के मध्य सहसम्बन्ध ज्ञात करना।
2. शिक्षक प्रशिक्षण विभागों में कार्यरत महिला वर्ग की शिक्षिकाओं व पुरुष वर्ग के शिक्षको के व्यक्तित्व के गुणों का अध्ययन करना ।
3. शिक्षक प्रशिक्षण विभागों में कार्यरत महिला वर्ग की शिक्षिकाओं व पुरुष वर्ग के शिक्षको की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन करना ।

अध्ययन की परिकल्पना

अध्ययन की परिकल्पनाएँ निम्नलिखित थीं:

1. शिक्षक प्रशिक्षण विभागों में कार्यरत शिक्षको की शिक्षण प्रभावशीलता एवं व्यक्तित्व के गुणों के मध्य कोई सहसम्बन्ध नही है ।
2. शिक्षक प्रशिक्षण विभागों में कार्यरत महिला वर्ग की शिक्षिकाओं व पुरुष वर्ग के शिक्षको के व्यक्तित्व के गुणों में कोई भी सार्थक अंतर नही है ।
3. शिक्षक प्रशिक्षण विभागों में कार्यरत महिला वर्ग की शिक्षिकाओं व पुरुष वर्ग के शिक्षको की शिक्षण प्रभावशीलता में कोई भी सार्थक अंतर नही है ।

अध्ययन का परिसीमन

अध्ययन को निम्नानुसार सीमित किया गया था:

1. यह अध्ययन केवल निजी एवं सहायता प्राप्त संस्थानों के शिक्षकों तक सीमित था।
2. यह अध्ययन केवल निजी एवं सहायता प्राप्त संस्थानों के शिक्षक प्रशिक्षण विभागों में कार्यरत शिक्षकों तक सीमित था।
3. यह अध्ययन निजी एवं सहायता प्राप्त संस्थानों के शिक्षक प्रशिक्षण विभागा में कार्यरत केवल 100 शिक्षकों तक सीमित था।
4. यह अध्ययन केवल चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ के निजी एवं सहायता प्राप्त संस्थानों के शिक्षक प्रशिक्षण विभागों में कार्यरत शिक्षकों तक सीमित था।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन के लिए शोध की वर्णनात्मक विधि का प्रयोग किया गया है। यह विधि मौजूदा घटना या मुद्दे, स्थितियों और संबंधों के सर्वेक्षण, वर्णन और जांच से संबंधित है।

समष्टि

एक शोध परियोजना में, शोधकर्ता आमतौर पर एक अप्रबंधनीय आबादी में आते हैं। जनसंख्या से तात्पर्य उन सभी मामलों से है जिनकी जाँच की जा रही है या वे सभी लोग या वस्तुएँ जिनकी विशेषता कोई व्यक्ति समझना चाहता है। चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ से सम्बद्धता प्राप्त सभी शिक्षक प्रशिक्षण विभागों में कार्यरत शिक्षक इस शोध कार्य में समष्टि है ।

न्यादर्श एवं न्यादर्श प्रविधि

वर्तमान शोध कार्य के लिय चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ से सम्बद्धता प्राप्त बागपत जिले के शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में से यादृच्छिक नमूना चयन तकनीक के लॉटरी विधि द्वारा 10 संस्थानों का चयन किया गया । इस प्रकार उपरोक्त 10 संस्थानों में से प्रत्येक संस्थान से 10 शिक्षको का यादृच्छिक नमूना चयन तकनीक से चयन किया गया अतः इस शोध कार्य हेतु कुल 100 शिक्षको का नमूना लिया गया ।

उपकरण का प्रयोग

डेटा के संग्रह के लिए एक व्यवस्थित प्रक्रिया को अपनाना काफी आवश्यक है। प्रत्येक प्रकार के अनुसंधान के लिए नए क्षेत्रों का पता लगाने के लिए कुछ उपकरणो की आवश्यकता होती है।एक सफल शोध के लिए उचित उपकरणों का चयन बहुत महत्वपूर्ण है। प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया गया है:

1. **आयामी व्यक्तित्व सूची (डॉ महेश भार्गव)**

आंकड़ो का विश्लेष्ण एवं व्याख्या

1 पहली शून्य परिकल्पना, शिक्षक प्रशिक्षण विभागों में कार्यरत शिक्षको की शिक्षण प्रभावशीलता एवं व्यक्तित्व के गुणों के मध्य कोई सहसम्बन्ध नही है।

तालिका–1

शिक्षक प्रशिक्षण विभागों में कार्यरत शिक्षको की शिक्षण प्रभावशीलता एवं व्यक्तित्व के गुणों के मध्य सहसम्बन्ध

चर	सहसम्बन्ध का गुणांक (आर)
शिक्षण प्रभावशीलता व व्यक्तित्व के गुण	*0.152 (सार्थक)

तालिका मान = 0.05 सार्थकता स्तर पर– 0.112
तालिका मान = 0.01 सार्थकता स्तर पर– 0.148
'सार्थक नही है

तालिका–1 प्रदर्शित करती है कि शिक्षक प्रशिक्षण विभागों में कार्यरत शिक्षको की शिक्षण प्रभावशीलता एवं व्यक्तित्व के गुणों क सहसम्बन्ध का गुणांक (आर) 0.152 प्राप्त

हुआ है जोकि **0.01** तथा **0.05** सार्थकता स्तर पर सार्थक है अतः शिक्षण प्रभावशीलता व व्यक्तित्व के गुणों के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध है।

2. दूसरी शून्य परिकल्पना, शिक्षक प्रशिक्षण विभागों में कार्यरत महिला वर्ग की शिक्षिकाओं व पुरुष वर्ग के शिक्षको के व्यक्तित्व के गुणों में कोई भी सार्थक अंतर नही है ।

तालिका–2

शिक्षक प्रशिक्षण विभागों में कार्यरत महिला वर्ग की शिक्षिकाओं व पुरुष वर्ग के शिक्षको के व्यक्तित्व के गुणों का मध्यमान, मानक विचलन व टी' मान

शिक्षक प्रशिक्षण विभागों में कार्यरत शिक्षक	शिक्षको की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी' मान (डी० एफ० = 98)
महिला	50	97.71	4.70	***0.156** (सार्थक नही)
पुरुष	50	97.86	4.89	

तालिका मान = 0.05 सार्थकता स्तर पर– 1.97
तालिका मान = 0.01 सार्थकता स्तर पर– 2.60
सार्थक नही है

तालिका–1 प्रदर्शित करती है की शिक्षक प्रशिक्षण विभागों में कार्यरत संस्थानों के महिला वर्ग की शिक्षिकाओं का मध्यमान 97.71 तथा मानक विचलन 4.70 व शिक्षक प्रशिक्षण विभागों में कार्यरत संस्थानों के पुरुष वर्ग के शिक्षको का मध्यमान 97.86 तथा मानक विचलन 4.89 है। उपरोक्त दोनों ग्रुप के 'टी' परिक्षण का मान 0.156 है जोकि किसी भी सार्थकता स्तर पर सार्थक नही पाया गया है । अतः संस्थानों के महिला वर्ग की शिक्षिकाओं के व्यक्तित्व के गुणों व पुरुष वर्ग के शिक्षको के व्यक्तित्व के गुणा में कोई सार्थक अन्तर नही है।

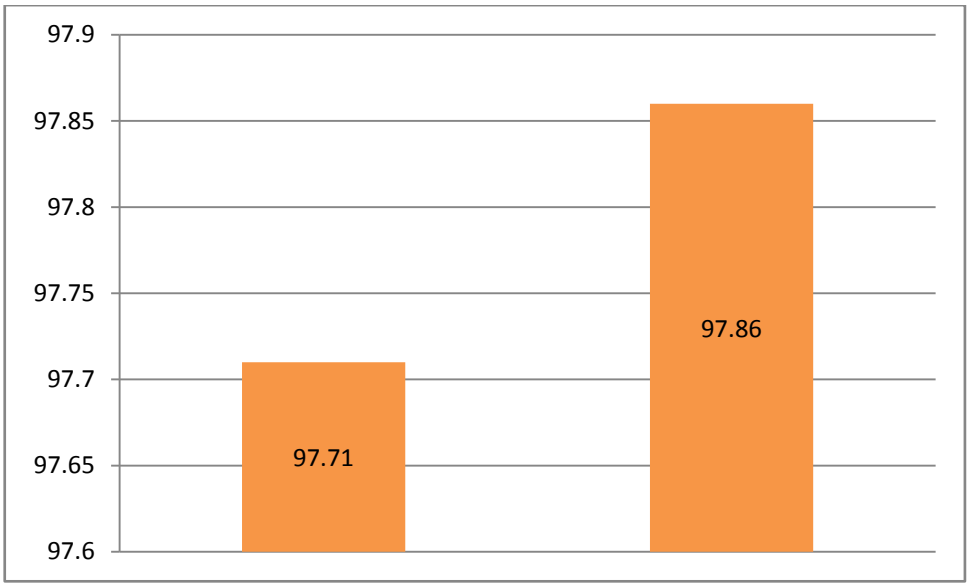

चित्र–1 शिक्षक प्रशिक्षण विभागों में कार्यरत महिला वर्ग की शिक्षिकाओं व पुरुष वर्ग के शिक्षको के व्यक्तित्व के गुणों का मध्यमान प्रदर्शित करता है।

3. तीसरी शून्य परिकल्पना, शिक्षक प्रशिक्षण विभागों में कार्यरत महिला वर्ग की शिक्षिकाओं व पुरुष वर्ग के शिक्षको की शिक्षण प्रभावशीलता में कोई भी सार्थक अंतर नही है ।

तालिका–3

शिक्षक प्रशिक्षण विभागों में कार्यरत महिला वर्ग की शिक्षिकाओं व पुरुष वर्ग के शिक्षको की शिक्षण प्रभावशीलता का मध्यमान, मानक विचलन व 'टी' मान

शिक्षक प्रशिक्षण विभागों में कार्यरत शिक्षक	शिक्षको की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	'टी' मान (डी० एफ० =98)
महिला	50	98.07	4.59	0.205 (सार्थक नही)
पुरुष	50	97.88	4.67	

तालिका मान = 0.05 सार्थकता स्तर पर– 1.97
तालिका मान = 0.01 सार्थकता स्तर पर– 2.60
सार्थक नही है

तालिका–3 प्रदर्शित करती है की शिक्षक प्रशिक्षण विभागों में कार्यरत संस्थानों की महिला वर्ग की शिक्षिकाओं का मध्यमान 98.07 तथा मानक विचलन 4.59 व शिक्षक प्रशिक्षण विभागों में कार्यरत संस्थानों के पुरुष वर्ग के शिक्षको का मध्यमान 97.88 तथा मानक विचलन 4.67 है। उपरोक्त दोनों ग्रुप के 'टी' परिक्षण का मान 0.205 है जोकि किसी भी सार्थकता स्तर पर सार्थक नही पाया गया है। अतः संस्थानों की महिला वर्ग की शिक्षिकाओ के व्यक्तित्व के गुणों व संस्थानों के पुरुष वर्ग के शिक्षको के व्यक्तित्व के गुणो में कोई सार्थक अंतर नही है ।

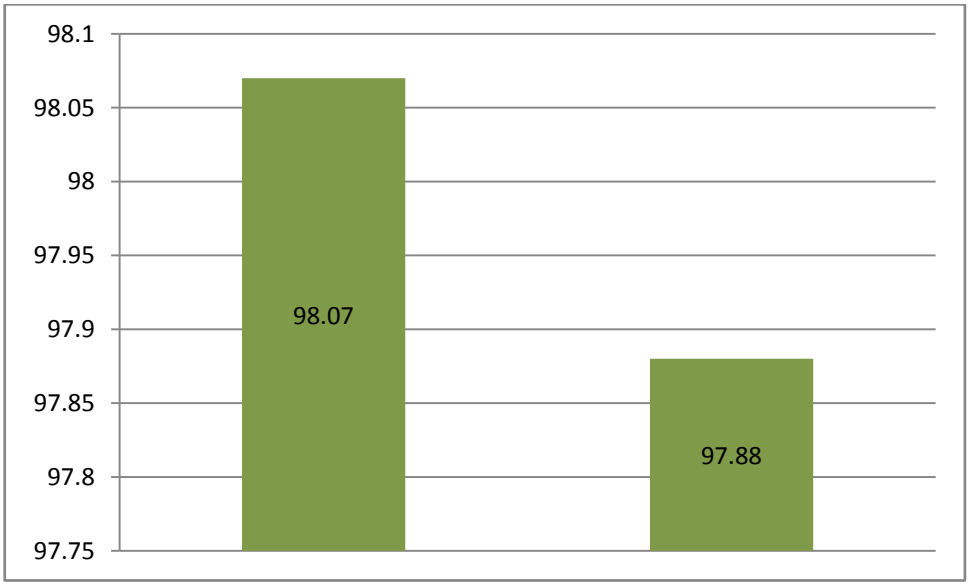

चित्र–2 शिक्षक प्रशिक्षण विभागों में कार्यरत महिला वर्ग की शिक्षिकाओं व पुरुष वर्ग के शिक्षको के व्यक्तित्व के गुणों का मध्यमान प्रदर्शित करता है।

मुख्य परिणाम

विश्लेषण और परिणामों की व्याख्या के बल पर, अन्वेषक मुख्य निष्कर्ष निकालने की स्थिति में है। यह अध्याय मुख्य परिणाम, सारांश की चर्चा, शैक्षिक निहितार्थ और आगे के शोध के लिए सुझावों से संबंधित है जो उसी क्रम में प्रस्तुत किए गए हैं।

1. पहली शून्य परिकल्पना, शिक्षक प्रशिक्षण विभागों में कार्यरत शिक्षको की शिक्षण प्रभावशीलता एवं व्यक्तित्व के गुणों के मध्य कोई सहसम्बन्ध नही है , अस्वीकार हो गयी है ।

2. दूसरी शून्य परिकल्पना, शिक्षक प्रशिक्षण विभागो में कार्यरत महिला वर्ग की शिक्षिकाओं व पुरुष वर्ग के शिक्षको के व्यक्तित्व के गुणों में कोई भी सार्थक अंतर नही है, स्वीकार हो गयी है ।
3. तीसरी शून्य परिकल्पना, शिक्षक प्रशिक्षण विभागों में कार्यरत महिला वर्ग की शिक्षिकाओं व पुरुष वर्ग के शिक्षको की शिक्षण प्रभावशीलता में कोई भी सार्थक अंतर नही है स्वीकार हो गयी है ।

शैक्षिक निहितार्थ

शोध कार्यो की शैक्षिक उपयोगिता इस पर निर्भर करती है कि शोध कार्यो के परिणामों का शिक्षा में क्या उपयोग हो सकता है क्योंकि अतं मे शोधकार्य तभी सार्थक माने जाते है जब इन परिणामों का शिक्षा में क्रान्तिकारी उपयोग हो सके इस शोध कार्य के उपयोग को हम निम्न प्रकार से स्पष्ट कर सकते है।

- शिक्षकों के बीच काम के वितरण के संबंध में शिक्षकों के निर्णयों और निर्देशा का पालन करके शक्तिहीनता तनाव को नियंत्रित किया जा सकता हैय और प्रशिक्षण कार्यक्रमों के संबंध में शिक्षक के सुझावों को उचित महत्व देकर और महत्वपूर्ण पदों पर नियुक्तियाँ करना। अन्य शिक्षकों के कामकाज और परिणाम और स्कूल की प्रगति के बारे में शिक्षकों को जिम्मेदारियां सौंपकर व्यक्तियों के तनाव के लिए जिम्मेदारी को नियंत्रित किया जा सकता है।
- प्रशासनिक या शैक्षिक समस्या समाधान प्रक्रियाओं में शिक्षकों के सहयोग की मांग करकेय और नीति बनाने या कार्य प्रणाली को संशोधित करने के संबंध में शिक्षकों के सुझाव मांगकर। शिक्षकों के बीच काम के वितरण के संबंध में शिक्षकों के निर्णयों और निर्देशों का पालन करके शक्तिहीनता तनाव को नियंत्रित किया जा सकता हैय और प्रशिक्षण कार्यक्रमों के संबंध में शिक्षक के सुझावों को उचित महत्व देकर और महत्वपूर्ण पदों पर नियुक्तियाँ करना।
- अन्य शिक्षकों के कामकाज और परिणाम और स्कूल की प्रगति के बारे में शिक्षकों को जिम्मेदारियां सौंपकर व्यक्तियों के तनाव के लिए जिम्मेदारी को नियंत्रित किया जा सकता है।

- ❖ शिक्षकों के बीच काम के वितरण के संबंध में शिक्षकों के निर्णयों और निर्देशों का पालन करके शक्तिहीनता तनाव को नियंत्रित किया जा सकता हैय और प्रशिक्षण कार्यक्रमों के संबंध में शिक्षक के सुझावों को उचित महत्व देकर और महत्वपूर्ण पदों पर नियुक्तियाँ करना।
- ❖ सहायता प्राप्त संस्थानों के शिक्षक प्रशिक्षण विभागों के शिक्षकों के सैद्धान्तिक, सामाजिक तथा धार्मिक मूल्य निजी संस्थानों के शिक्षक प्रशिक्षण विभागो में कार्यरत शिक्षकों के मूल्य से अधिक मात्रा में पाये जाते है।
- ❖ शिक्षा के द्वारा यह कर्तव्य बनता है कि हम शिक्षा के इस प्रकार के कार्यक्रम को पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं में आयोजित करें जिनके द्वारा ऐसे छात्र छात्राएं जो प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे है उनके अन्तर्गत भी इन मूल्यों का पर्यप्त मात्रा में समावेश हो सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि

अंदाबाई, पीडब्लू (2013)। नाइजीरिया में तृतीयक संस्थानों के शिक्षक का व्यक्तित्व और कक्षा प्रबंधन: मुद्दे और दृष्टिकोण। अंतःविषय अध्ययन के अकादमिक जर्नल, 2(5), 73-78।

अंबु, ए। (2015)। उच्च माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों का व्यावसायिक तनाव। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च एंड डेवलपमेंट, 2(1), 1- 3.

अंबुचेलवन, सी। (2010)। हाई स्कूल के शिक्षकों का व्यावसायिक तनाव। एडुट्रैक्स, 9(9), 31-33।

अकिनबॉय, जो, अकिनबॉय, डीओ, और एडेयमो, डीए (2002)। जीवन और कार्यस्थल में तनाव का सामना करना। नाइजीरिया: स्टरलिन-होर्डन.

अकीरी, एए, और उगबोरुग्बो, एनएम (2009)। डेल्टा स्टेट, नाइजीरिया में पब्लिक सेकेंडरी स्कूलों में शिक्षकों की प्रभावशीलता और छात्रों का अकादमिक प्रदर्शन। गृह और सामुदायिक विज्ञान पर अध्ययन, 3(2), 107-113।

इम्हानलाहिमी, ईओ, और एगुएल, एलआई (2006)। ईदो राज्य, नाइजीरिया में निर्देशात्मक प्रक्रिया में जीव विज्ञान शिक्षकों की प्रभावशीलता का आकलन करने के लिए तीन उपकरणों की तुलना करना। जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज, 13(1), 67-70.

इवांस, ईडी (1976)। शिक्षण का संक्रमण। न्यूयॉर्क: होल्ट, राइनहार्ट और विंस्टन।

ईआई-सईद, एसएच, ईआई-ज़ीनी, एचएच, और एडेयमो, डीए (2014)। नर्सिंग ज़ागाज़िग विश्वविद्यालय, मिस्र के संकाय सदस्यों के बीच व्यावसायिक तनाव, भावनात्मक बुद्धिमत्ता और आत्म-प्रभावकारिता के बीच संबंध। जर्नल ऑफ नर्सिंग एजुकेशन एंड प्रैक्टिस, 4(4), 183-194।

कैसल, वीएल (2003)। एक महत्वपूर्ण शिक्षण प्रक्रिया का विकास: एक बहु संवेदी एकीकृत दृष्टिकोण। निबंध सार अंतर्राष्ट्रीय: खंड ए। मानविकी और सामाजिक विज्ञान, 63 (09), 3097।

कॉक्स, टी., मैके, सी.जे., कॉक्स, एस., वाट्स, सी., और ब्रॉकली, टी. (1978)। स्कूल के शिक्षकों में तनाव और भलाई। व्यावसायिक तनाव के लिए साइकोफिजियोलॉजिकल रिस्पांस पर एर्गोनॉमिक्स सोसाइटी सम्मेलन में प्रस्तुत किया गया पेपर, नॉटिंघम विश्वविद्यालय, नॉटिंघम।

कॉनर, केआर, और किल्मर, एन। (2001)। प्राथमिक और माध्यमिक सहयोगी शिक्षक प्रभावशीलता : क्या कोई अंतर है ? पेपर मिड -वेस्टर्न एजुकेशनल रिसर्च एसोसिएशन , शिकागो, आईएल (ईडी 461640) की वार्षिक बैठक में प्रस्तुत किया गया। f . को पुनः प्राप्त किया गयारोम http://www.eric.ed.gov/

ईटी (1999)। जॉब स्ट्रेस एक बढ़ता खतरा। 22 फरवरी, 2012 को से लिया गयाhttp://money.cnn.com/1999/01/06/life/q_stress/

उपाध्याय, बीके, और सिंह, बी (2001)। कॉलेज और स्कूल के शिक्षकों के बीच व्यावसायिक तनाव। साइको लिंगुइया, 31(1), 49-52.

सिंह, डी., शर्मा, आर., तरुना, और शिखा। (2014)। छात्रों के बीच तनाव के भविष्यवक्ता : व्यक्तित्व लक्षणों की भूमिका। इंडियन जर्नल ऑफ साइकोलॉजी एंड मेंटल हेल्थ, 8(1), 23-31.